पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 16.02.2018 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
प्रस्तुत करता है
शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के
बलिदान दिवस पर
भव्य संगीत संध्या
शुक्रवार, 23 मार्च 2018, सायं 5 बजे
स्थानः आर्य समाज, सुभाष नगर, पश्चिमी दिल्ली
हजारों की संख्या में पहुंचे

वर्ष-34 अंक-18 फाल्गुन-2074 दयानन्दाब्द 194 16 फरवरी से 28 फरवरी 2018 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.02.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 194वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों पर चलने की आवश्यकता-सांसद मीनाक्षी लेखी

सांसद मीनाक्षी लेखी का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,राधा भारद्वाज, दुर्गेश आर्य, महेन्द्र भाई व धर्मपाल आर्य व द्वितीय चित्र–सांसद मीनाक्षी लेखी का अभिनन्दन करते प्रवीन आर्या,उर्मिला आर्या, प्रि. अन्जू महरोत्रा व वीना थरेजा।

रविवार 11 फरवरी 2018, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती का 194वां जन्मोत्सव 14, महादेव रोड़ नई दिल्ली में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य यशपाल शास्त्री ने यज्ञ करवा कर किया। मुख्य अतिथि सांसद मीनाक्षी लेखी ने कहा कि महर्षि दयानन्द के सिद्धातों पर चलने की आवश्यकता है। कन्या भ्रुण हत्या, दहेज प्रथा व सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। आर्य समाज के लोगों को समाज के बीच जाकर पाखण्ड अंधविश्वास के विरुद्ध जनजागरण करना है। उन्होने कहा की शिक्षा क्षेत्र में भी आज सुधार की जरूरत है जिससे युवा पीढ़ी देश भक्त तैयार हो। पूर्व महापौर सुभाष आर्य ने आर्य समाज को आंदोलन बनाने का आह्वान किया उन्होंने कहा कि राष्ट्र की समस्याओं का हल महर्षि दयानंद के आदर्शों पर चलने पर ही होगा। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अनिल आर्य ने कहा की राष्ट्र में विघटनकारी शक्तियां से उठा रही है युवाओं में संस्कार व देश की भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा पैदा करना समय की आवश्यकता है, ऋषि दयानन्द ने सबसे पहले स्वाधीनता के संदेश दिया जिससे प्रेरणा लेकर हजारों युवा आजादी के आंदोलन में कूद पड़े। समारोह की अध्यक्षता आर्य नेता दर्शन अग्निहोत्री ने की। वैदिक विद्वान आचार्य वीरेंदर विक्रम, आचार्य योगेंद्र शास्त्री, बहिन वैशाली, पुष्पा चुघ , आचार्य महेन्द्र भाई ने भी अपने विचार रखे। अनिल शर्मा, भारत मदान, ओम सपरा, यशपाल आर्य, सौरभ गुप्ता, अंजू मेहरोत्रा, रमेश गाड़ी, उर्मिला आर्य, चन्दर भान अरोड़ा, देवेन्द्र भगत आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे

समारोह को सम्बोधित करते सांसद मीनाक्षी लेखी, मंच पर आचार्य वीरेन्द्र विक्रम, चन्द्रभान अरोड़ा, डा. अनिल आर्य, दर्शन अग्निहोत्री व ओम सपरा व द्वितीय चित्र–यज्ञ प्रेमी दर्शन अग्निहोत्री का अभिनन्दन करते सांसद मीनाक्षी लेखी, दुर्गेश आर्य व सुरेश आर्य।

दिल्ली के कौने कौने से पधारे श्रद्धालु आर्य जनों का अपार जनसमूह

ऋषि दयानन्द के बोध से विश्व के सभी मनुष्यों का भाग्योदय

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आर्यसमाज आन्दोलन के संस्थापक और महाभारतकाल के बाद वैदिक धर्म के प्रचारक शिखर पुरुष ऋषि दयानन्द के बोध की इस लेख में चर्चा करते हैं। ऋषि दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पिता कर्षनजी तिवारी थे। आप गुजरात राज्य के मोरवी जनपद के टंकारा नामक स्थान पर 12 फरवरी, 1825 ईस्वी को जन्में थे। आयु का चौहरवां वर्ष चल रहा था। पिता शिवभक्त थे। शिवरात्रि निकट थी, अतः पिता ने अपने लगभग 14 वर्षीय पुत्र मूलशंकर को शिव पुराण की कथा सुनाकर उन्हें शिवरात्रि का व्रत रखने की प्रेरणा की। शिव की कथा में पिता ने उन्हें ईश्वर के रूप में चित्रित कर उन्हें संसार का रचयिता और मनुष्यों की सब कामनाओं को पूर्ण कराने वाला बताया था। पिता ने जब उन्हें शिवरात्रि का व्रत करने की प्रेरणा की तो कम आयु व दिन में अनेक बार भोजन करने वाले बालक मूलशंकर ने शिवरात्रि का व्रत रखना स्वीकार कर लिया। शिवरात्रि के दिन मूलशंकर जी ने विधि विधान पूर्वक व्रत किया। रात्रि को टंकारा के निकटस्थ शिव मन्दिर में रात्रि जागरण के लिए पिता के साथ पहुंच गये। ग्राम के अनेक लोग भी वहां मन्दिर में जागरण के लिए एकत्रित थे। मूलशंकर को बताया गया था कि यदि जागरण करते समय व्यक्ति सो जाता है तो उससे व्रत का फल भंग हो जाता है। इस बात को अपने मन में रखकर मूलशंकर जाग रहे थे। नींद का प्रभाव होता तो वह अपनी आंखों पर जल के छींटे दे देते थे। देर रात्रि मन्दिर में उपस्थित सभी भक्तजन सो गये। एक बालक मूलशंकर ही जाग रहे थे। वह देखते हैं कि मन्दिर के बिलों से चूहे निकले और शिव की पिण्डी पर इधर उधर अबाध रूप से भ्रमण करने लगे। वहां भक्तों ने जो अन्न आदि पदार्थ चढ़ा रखे थे उन्हें वह चूहे खा रहे थे। इस दृश्य को देखकर बालक मूलशंकर का मन अनेक प्रश्नों से घिर गया। उन्हें समझ नहीं आया कि जब शिव सर्वशक्तिमान हैं तो वह चूहों को अपने मस्तक से भगा क्यों नहीं रहे हैं। चूहों का स्वतन्त्रतापूर्वक विचरण करना उन्हें उचित प्रतीत नहीं हो रहा था। उन्होंने मन्दिर में ऊंघ रहे अपने पिता को नींद से जगाया और चूहों का वह दृश्य दिखा कर पूछा कि शिव इन चूहों को अपने मस्तक पर से भगा क्यों नहीं रहे हैं? क्या इनमें इन्हें भगाने जितना भी बल नहीं है। मनुष्य पर मक्खी भी बैठ जाये तो वह उसे हटा देता है। भगवान शिव को भी चूहों की इस दुष्टता के लिए दण्डित करना चाहिये। पिता कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सके। इससे रुष्ट होकर मूलशंकर पिता की आज्ञा ले कर घर चले गये और उन्होंने अपना व्रत तोड़ दिया। अपनी माता से उन्होंने भोजन लिया, खाया और सो गये तथा अगले दिन कुछ देर से उठे। शिव के सिर पर चूहों का उछल कूद करना, शिव का उन्हें न हटाना ही ऋषि दयानन्द को बोध कहा जाता है। उन्हें यह बोध हुआ था कि शिव की मूर्ति ईश्वर की भांति सर्वशक्तिमान नहीं है। ईश्वर वा शिव का यथार्थ स्वरूप मूर्ति में विद्यमान नहीं है। शिव की वह पाषाण मूर्ति तो शक्ति व बल से रहित है जो एक साधारण चूहे को भी नहीं भगा सकती। इस बोध के परिणाम स्वरूप ही उन्होंने सदा सदा के लिए शिव व अन्य किसी देवता की मूर्ति की पूजा करना छोड़ दिया और जीवन के उत्तरार्ध में मूर्तिपूजा का खण्डन व निराकार व सर्वव्यापक सच्चिदानन्द स्वरूप ईश्वर का योग विधि ध्यान व उपासना का प्रचार किया।

शिवरात्रि की घटना के बाद उनकी एक बहिन की अचानक हैजे से मृत्यु हो गई और उसके कुछ काल बाद उनको सबसे अधिक प्यार करने वाले चाचा जी की मृत्यु हुई। इन घटनाओं ने उनके जीवन में वैराग्य भावना को उत्पन्न किया। वह जीवन व मृत्यु के यथार्थ रहस्य को जानना चाहते थे और इसके साथ ही ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को भी जानना चाहते थे। ईश्वर की प्राप्ति के साधन क्या हैं, वह भी उनके लिए जिज्ञासा का विषय था। इन प्रश्नों के उत्तर उन्हें अपने आसपास नहीं मिले अतः उन्होंने विद्या के अध्ययन में मन लगाया। उनके माता–पिता को उनके वैराग्य भाव का पता चला तो उन्होंने उनका विवाह करने का निश्चय किया। विवाह की तिथि निकट आने पर गृहस्थ जीवन में पड़ने से बचने के लिए वह आयु के 22वें वर्ष में अपने घर से निकल भागे। उसके बाद लगभग 13 वर्षों तक उन्होंने देश के अनेक भागों का भ्रमण किया और इस मध्य साधु, संन्यासी व विद्वानों से भेंट ओने पर उनसे अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करने का प्रयत्न करते रहे। उन्हें जहां पुस्तकालय या किसी विद्वान आदि से जो भी पुस्तकें मिल जाती थी, उसका वह अध्ययन करते थे। संन्यास लेकर वह स्वामी दयानन्द बन चुके थे। योगाभ्यास में उनको अच्छी सफलता प्राप्त हुई थी। विद्या ग्रहण का स्वप्न पूरा करना उन्हें अभी शेष था। उन्हें ज्ञात हो चुका था कि मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी ज्ञान व विद्या के धनी हैं। वह वहां एक पाठशाला भी चलाते थे। सन् 1857 की देश को आजाद कराने की क्रान्ति से पूर्व व पश्चात उथल पुथल के बाद सन् 1860 में वह मथुरा पहुंचते हैं और प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से वैदिक व्याकरण अष्टाध्याय–महाभाष्य–निरुक्त आदि का अध्ययन करते हैं। इस अन्तेवासी शिष्य को स्वामी विरजानन्द जी से वेद, दर्शन, उपनिषद आदि अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों की चर्चा करने का अवसर अवश्य ही मिला होगा।

सन् 1863 में अध्ययन समाप्त कर उन्होंने स्वामी विरजानन्द जी से विदा ली और उनकी प्रेरणा व मंत्रणा से संसार में वेदप्रचार कर अविद्या दूर करने का मिशन पूरा करने का संकल्प लिया। इसके बाद स्वामी दयानन्द जी वेदों की मूल सिंहताओं की प्राप्ति, उसके चिन्तन–मनन व उनके आधार पर अपनी मान्यताओं के निर्धारण में लग गये। वेदों की मूल संहितायें प्राप्त कर उनका अनुशीलन करने के बाद उन्होंने वेदों का प्रचार आरम्भ कर दिया। देश के अनेक भागों में जा–जा कर वहां वैदिक प्रवचन व उपदेश किये। स्वामीजी मूर्तिपूजा का खण्डन करते थे। उनका मानना था कि मूर्तिपूजा वेदविहित न होने, वेदविरुद्ध होने व युक्तिसंत न होने से व्यर्थ का कार्य है। ईश्वर की उपासना की सही विधि ईश्वर के वेद वर्णित गुणों से ईश्वर का ध्यान करते हुए उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना व वेदादि ग्रन्थों का स्वाध्याय ही है। इसी कारण उन्होंने पंचमहायज्ञ विधि लिखी जिसका प्रथम यज्ञ वा कर्तव्य ईश्वरोपासना व सन्ध्या है। सन्ध्या ईश्वर का प्रातः व सायं ध्यान करने को कहते हैं। स्वामी जी ने वायु व जल की शुद्धि के लिए अग्निहोत्र देवयज्ञ को भी गृहस्थ मनुष्यों का आवश्यक कर्तव्य बताया। यज्ञ करने से मनुष्य स्वस्थ, निरोग, दीर्घायु, आस्तिक, ईश्वर का प्रिय व ज्ञान व विज्ञान से संयुक्त व समृद्ध होता है। इसी प्रकार उन्होंने प्रतिदिन पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्वदेवयज्ञ को भी गृहस्थियों के लिए अनिवार्य बताया। मूर्तिपूजा ईश्वरीय ज्ञान वेद के विरुद्ध है। इसे पौराणिक सनातनी विद्वानों से मनवाने के लिए उन्होंने मूर्तिपूजा को वेदविहित सिद्ध करने के लिए शास्त्रार्थ व संवाद आदि किये जिसमें वह सदैव सफल रहे। सनातनी बन्धु मूर्तिपूजा के पक्ष में वेद को कोई प्रमाण, कोई ठोस युक्ति व तर्क नहीं दे सके। स्वामी दयानन्द जी ने अविद्या दूर करने के लिए ही मूर्तिपूजा का खण्डन कर सच्चिदानन्द गुणों से युक्त परमात्मा की वेद व योगदर्शन की विधि से उपासना का प्रचार किया था। वेदों के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने पंचमहायज्ञविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि, व्यवहारभानु एवं कुछ खण्डनात्मक ग्रन्थों सहित अनेक वैदिक ग्रन्थों की रचना की। इसके अतिरिक्त स्वामीजी ने चार वेदों के संस्कृत व हिन्दी में भाष्य बनाने का कार्य भी आरम्भ किया था। यह अत्यन्त महान कार्य था। सृष्टि के आरम्भ से ऋषि दयानन्द के काल तक वेद व ऋषियों के आर्ष प्रमाणों से युक्त चार वेदों का ऐसा कार्य किसी ने नहीं किया था। यदि किया भी होगा तो वह उपलब्ध नहीं था। जो वेदार्थ उपलब्ध थे वह वेद विरुद्ध व वेदों की वास्तविक महिमा को घटनाने वाले थे। यजुर्वेद का भाष्य वह पूरा कर चुके थे। ऋग्वेद के 10 मण्डलों में से 6 मण्डलों का भाष्य उन्होंने पूरा किया और सातवें मण्डल का भी अधिकांश भाग वह पूरा कर चुके थे। स्वामी जी आम नागरिकों को जो वदोपदेश देते थे वह ऐतिहासिक दृष्टि से अपूर्व होते थे। लोग उनके उपदेशों को सुनकर भाव विभोर होते थे और अनेकों की आत्मा उन्हें सत्य अनुभव करती थी। वह ऋषि दयानन्द जी के अनुयायी बन जाते हैं। ऐसे अनुयायी लोगों की संख्या में वृद्धि होती रही जिस कारण लोगों के निवेदन करने पर महर्षि दयानन्द ने मुम्बई के काकड़वाडी क्षेत्र में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना की। इसके बाद अनेकों स्थानों पर आर्यसमाज की स्थापनायें होने लगी। ऋषि दयानन्द जी का मिशन वेदज्ञान प्रचार व अविद्या अर्थात् मिथ्याज्ञान का नाश करना था। अतः आर्यसमाजें स्थापित होकर वह ऋषि के कामों को गति दें, यह ऋषि दयानन्द जी को अभीष्ट था। यह कार्य उत्तरोत्तर सफलता को प्राप्त हो रहा था। आर्यसमाज के अनुयायियों में वृद्धि हो रही थी जिससे पौराणिक सनातन बन्धु व विधर्मी स्वामीजी के प्रति द्वेष भाव रखने लगे थे। अंग्रेज सरकार के भी ऋषि द्वारा ईसाई मत के खण्डन से प्रसन्न होने का प्रश्न ही नहीं था। अतः सभी स्वामी जी के बढ़ते प्रभाव व प्रचार कार्य को रोकना चाहते थे। अन्ततः वह उसमें सफल भी हुवे। जोधपुर में उन्हें प्राणघातक विष दिया गया जिससे अजमेर में 30 अक्तूबर, सन् 1883 को उनकी मृत्यु हो गई। इस षडयन्त्र में किन लोगों की क्या क्या भूमिकायें थी, हम समझते हैं कि वह सामने नहीं आ सकी। स्वामीजी यदि कुछ वर्ष और जीवित रहते तो और अधिक वेद प्रचार करते और और अधिक अविद्या दूर होती। उनके द्वारा और अधिक ग्रन्थ लिखे जाते और उनके साक्षात अनुयायियों की संख्या में भी और वृद्धि होती। यह सन्तोष का विषय है कि स्वामी जी के बाद उनके अनुयायियों ने उनके मिशन को पूरा करने का कार्य जारी रखा। यह मिशन हम समझते हैं कि वेद प्रचार का कार्य केवल स्वामी दयानन्द जी का नहीं अपितु ईश्वर का मिशन भी है। ईश्वर भी चाहते हैं कि संसार में वेद प्रचार हो और मनुष्य अविद्या से मुक्त हों। इस पर भी अज्ञानी व स्वार्थी मतानुयायियों व उनके आचार्यों ने लोगों को अविद्या में बांध व जकड़ रखा है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र है। ईश्वर जीवों को कर्मों का फल प्रदाता है। हम आशा करते हैं कि जिस प्रकार से संसार में ज्ञान की वृद्धि हो रही है, उससे कभी ऐसा समय आ सकता है कि जब लोग मिथ्या मत–मतान्तरों से उब जायें और सत्य मत 'वेद मत' की शरण में आयें। इसके लिए आर्यसमाज व ऋषि के अनुयायियों को वेदों का प्रचार जारी रखना होगा और वेद, वेदभाष्य और सत्यार्थप्रकाश आदि ऋषि ग्रन्थों, दर्शन व उपनिषदों समस्त वैदिक साहित्य की रक्षा भी करनी होगी। भविष्य में क्या होगा व क्या नहीं होगा, यह निश्चय से कहा नहीं जा सकता? महाभारत के बाद देश में जो परिस्थितियां बनी और आज भी हैं, उसके बारे में महाभारत के समय के आर्य विद्वानों ने शायद सोचा भी नहीं होगा। अब जो रहा है उसके आधार पर भी भविष्य का ठीक ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। अस्तु।

शिवरात्रि के दिन और अपनी बहिन और चाचा की मृत्यु से ऋषि को जो बोध व वैराग्य हुआ उससे देश व विश्व को लाभ हुआ। वेदों का पुनरुद्धार हुआ। वेदों के सरल संस्कृत व हिन्दी भाष्य मिले। सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे अनेक ग्रन्थ मिलें। आर्य विद्वानों का विभिन्न विषयों पर महत्वपूर्ण साहित्य मिला जिससे संसार को सच्चा वेदज्ञान उपलब्ध हो सका है। कहीं न कहीं प्रचार की कमी ही कही जा सकती अन्यथा वेदमत पुनः विश्व के मानवमात्र का धर्म बन सकता है। ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ ने देश व विश्व में सत्य वैदिक धर्म की प्रमाण, तर्क व युक्तियों से स्थापना कर दी है। अब देखना यह है कि विश्व कब समग्र रूप में वैदिक धर्म को स्वीकार करता है।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

शोक समाचारः विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती जमनादेवी (माता श्री कन्हैयालाल आर्य, गुरूग्राम) का निधन।
2. स्वामी श्रेयोनन्द विदेहयति (उत्तम नगर, दिल्ली) का निधन।
3. श्रीमती चन्द्रकांता (आशानन्द सी. सै. स्कूल, फरीदाबाद) का निधन।
4. श्रीमती फूलसमन्द्री देवी (दादी अरूण आर्य, नरेला) का निधन।
5. श्रीमती सीमा हंस (आर्य समाज, अशोक विहार, फेज–1) का निधन।
6. श्रीमती सुशीला रल्ली (धर्मपत्नि श्री योगराज रल्ली) का निधन।
7. आचार्य रामदत्त शर्मा (पूर्व प्राचार्य गुरुकुल ऐटा) का निधन।

सेना के जवानों पर मुकदमा उचित नहीं

—अवधेश कुमार

यह खबर निश्चय ही हर भारतवासी को चिंतित करेगा कि जम्मू कश्मीर पुलिस ने वहां कार्रवाई कर रहे सेना के जवानों पर मुकदमा दर्ज किया है। जिनके खिलाफ मुकदमा दर्ज हुआ है वे जवान 10 गढ़वाल यूनिट के हैं और इनमें एके. मेजर स्तर का अधिकारी भी शामिल है। मुकदमा 302 यानी हत्या और 307 यानी हत्या के प्रयास के तथा 336 यानी जिन्दगी को खतरे में डालने वाले के तहत दर्ज हुआ है। पिछले काफी समय से जम्मू कश्मीर पुलिसए सेनाए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और सीमा सुरक्षा बल के बीच गजब किस्म का समन्वय देखा जा रहा था। कश्मीर में शांति की कामना करने वाले हर व्यक्ति की चाहत है कि यह समन्वय बना रहे और राज्य के अंदर के आतंकवादी तथा सीमा पार से आतंकवाद को प्रायोजित करने वाले परास्त हों। आपसी समन्वय के कारण ही 2017 में सुरक्षा बलों को बड़ी कामयाबी मिली और 200 से ज्यादा आतंकवादी मारे गए। कई आतंकवादी बने नवजवान वापस आम जिन्दगी में लौटे हैं। इस इस एक घटना ने समन्वय की स्थिति पर गहरा प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है। यह प्रश्न उठने लगा है कि सुरक्षा एजेंसियां आपसी तालमेल से जो ऑपरेशन ऑल आउट चला रहीं हैं उनका क्या होगाघ क्या पुलिस और सेना के बीच फिर से किसी प्रकार के टकराव के दौर की शुरुआत होगी और आतंकवादी वं अलगाववादी इसका लाभ उठाएंगे।

ऐसा होता है तो निश्चय ही जम्मू कश्मीर के लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण होगा। आखिर सेना के जवानों पर मुकदमा दर्ज की नौबत क्यों आई और क्या यह सही कदम हैघ आरोप लगाया गया है कि सेना की गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई। इसके अनुसार सेना की कार्रवाई से कुछ और लोगों की मौत हो सकती थी लेकिन वे संयोग से बच गई। वैसे इस घटना की न्यायिक जांच के आदेश भी दे दिए गए हैं। घटना शोपियां जिले के गावं गनोवपोरा का है। सेना का काफिला वहां से गुजर रहा था। दरअसल काफिला बड़ा था जिसमें से पांच गाड़ियां पीछे छूट गईं थीं। उस पर लोगों ने पत्थर फेंकने शुरु कर दिए। आरंभ में संख्या कम थी लेकिन धीरे–धीरे उनकी संख्या बढ़ने लगी। सेना की ओर से जवाबी कार्रवाई न देख वे पूरी तरह हमलावर हो गए थे। एक जवान को उन्होंने खींच लिया और उस पर हमला कर दिया। जो कुछ दृश्य दिख रहा है उसमें साफ है कि सेना ने कार्रवाई न की होती तो पत्थरबाज उन्हें पीट–पीटकर मार डालते। अब सेना के पास दो ही विकल्प थाए या तो अपने साथी को उन पत्थरबाजों के हाथों मरता छोड़कर भाग जाती या उसे बचाने के लिए कार्रवाई करती। इनके लिए भागना भी आसान नहीं था। कारए गए हमलावरों की संख्या ज्यादा हो गई थीए गाड़ियों पर पत्थर बरस रहे थेए लोग डंडों से भी प्रहार कर रहे थे। पूरे घटनाक्रम का निष्पक्ष विश्लेष.ा करने वाला कोई भी यह स्वीकार करेगा कि एक विकट स्थिति पैदा हो गई थी जिसमें सेना को कार्रवाई करनी पड़ी। जो कोई भी सेना के जवानों को दोष देता है उनसे पूछा जाना चाहिए कि उनकी जगह आप होते तो क्या करते। सेना के खिलाफ इनका गुस्सा किस कारण था। कुछ दिन पहले उसी गांव में एक आतंकवादी छिपा हुआ था जिसे सेना ने मुठभेड़ में मार दिया था। अगर आतंकवादियों के पक्ष में किसी की हमदर्दी है और वह पत्थरों और डंडों से सेना के काफिले पर हमले के रुप में निकालेगा तो फिर उसका जवाब देना पड़ेगा। जितना फुटेज सामने आया है उसमें देखा जा सकता है कि सेना आरंभ में बल प्रयोग से बच रही है। इसका परिणाम है कि उनकी गाड़ियों के शीशे तक चनक रहे हैं। मौत किसी का हो दुख तो होगा किंतु लोगों को सोचना चाहिए कि आप सेना पर हमला करने आएंगे तो जवाब में आपको फुल नहीं मिलेगा। हमला का मतलब आप अपराध कर रहे हैं। आप हमलावर हैं। दुर्भाग्य देखिए प्रदेश की मुख्यमत्री मेहबूबा मुफ्ती तक ने सेना की कार्रवाई की तीखी आलोचना कर दी। जो खबरें आईं हैं उनके अनुसार उन्होंने तो रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण को फोन करके अपनी नाराजगी व्यक्त की। उनके बयान में पत्थरबाजों के खिलाफ एक भी शब्द नहीं सुना गया। ऐसा ही आचरण उमर अब्दुल्ला का है। ऐसा भी नहीं है कि लोगों के हमले में सेना को क्षति नहीं पहुंची। हिंसक भीड़ के हमले में एक जेसीओ (जूनियर कमीशंड ऑफिसर) समेत सात सैन्यकर्मी घायल हो गए थे। सेना के जवान मर जाएं तो कोई बात नहीं लेकिन आतंकवादियों की समर्थक हिंसक भीड़ के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होनी चाहिए!

अलगाववादियों को तो बहाना चाहिए। उन्होंने बंद का आह्वान कर दिया। किंतु मेहबूबा मुफ्ती प्रदेश की मुख्यमंत्री है। प्रदेश की कानून व्यवस्था उनकी जिम्मेवारी है। क्या उन्हें नहीं पता कि 2017 में आतंकवादियों से जूझते हुए 88 जवानों ने अपनी बलि दे दी है। इस वर्ष ही 11 जवान शहीद हो चुके हैं। सेना के जवानों के बलिदान को कोई भूल सकता है क्या मेहबूबा मुफ्ती और उनकी पार्टी पीडीपी सरकार में होते हुए भी प्रदेश से सशस्त्रबल विशेषाधिकार कानून यानी अफस्पा हटाने की पक्षधर हैं। नेशनल कॉन्फ्रेंस भी इसकी मांग कर रही है। ये पार्टियां चाहती हैं कि ऐसे आधार बन जाए जिनसे वे केन्द्र पर इसके लिए दबाव बना सकें। इस कानून में सैन्य बलों को कुछ विशेष अधिकार एवं कानूनी सुरक्षा कवच मिले हुए हैं। अगर ऐसा नहीं होगा तो आतंकवाद से लड़ना कठिन हो जाएगा। हम यहां अफस्पा के बहस में नहीं पड़ना चाहते। लेकिन हाल में ऐसी खबर आई है जिसमें कहा गया कि सरकार अफस्पा को थोड़ा सरल और नरम बनाने पर विचार कर रही है। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है और केन्द्र सरकार के रवैये को देखते हुए इस पर विश्वास करना संभव भी नहीं कि इस समय वे अफस्पा पर पुनर्विचार करेंगे। थलसेनाध्यक्ष जनरल विपीन रावत ने भी इसकी संभावना से इन्कार किया है। किंतु ऐसी खबरों के पीछे कोई लोग तो हैं।

हमें यह समझना होगा कि सुरक्षा बलों को आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष के स्थलों पर बड़ी कठिनाई में काम करना पड़ता है। बाहर रहकर सेना की आलोचना करना आसान हैए लेकिन उनकी जगह स्वयं को रखकर विचार करिए तो सब कुछ आसानी से समझ में आ जाता है। एक ओर आतंकवादी हैं जिनसे आपको मुठभेड़ करना है, जिनके हमलों से जनता को बचाना है और दूसरी ओर उनके समर्थन में उनका ढाल बने पत्थर उठाए या किसी तरह से खड़े लोग हैं। आपको लोगों को बचाना है और आतंकवादी या आतंकवादियों को पकड़ना या मारना है। इसमें कई बार लोग भी मारे जाते हैं। सेना के जवानों के जो बयान हम टीवी पर देखते हैं उसमें वे कहते हैं कि हम एक भी आम आदमी को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते लेकिन कई बार जब बिल्कुल जान पर बन आती है तो बल प्रयोग करना पड़ता है। आज सेना की कार्रवाइयों का ही प्रतिफल है कि घाटी में पत्थरबाजी में भारी कमी आई है। जम्मू–कश्मीर के पुलिस महानिदेशक ने ही सेना की प्रशंसा करते हुए कुछ दिनों पहले बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि 2017 में पत्थरबाजी में 90 प्रतिशत की कमी आई उसमें सेना के ऑल आउट ऑपरेशन तथा एनआइए द्वारा आतंकी फंडिग के मामले में अलगाववादियों के खिलाफ हुई कार्रवाई की भूमिका है। उन्होंने साफ कहा था कि ऑपरेशन ऑल आउट में बड़े आतंकवादियों के मारे जाने से पत्थरबाजी में कमी आई। अगर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक ऐसी धारणा रखते हैं तो वे सेना के किसी टुकड़ी के खिलाफ आसानी से मुकदमा दर्ज करने के लिए तैयार नहीं होंगे। निश्चय ही इसके पीछे राजनीतिक दबाव होगा। यह दबाव किसका हो सकता है बताने की आवश्यकता नहीं। किंतु देश ऐसे मुकदमे के पक्ष में नहीं हो सकता। इस तरह सेना के जवानों के खिलाफ मुदकमे होंगे तो फिर ऑपरेशन ऑल आउट में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई जो अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच रही है उसमें बाधा उत्पन्न हो जाएगी। यह उनका मनोबल तोड़ने का काम करेगा। हालांकि कोई चारा न देख सेना की ओर से भी प्राथमिकी दर्ज करा दी गई है। इससे एकपक्षीय कार्रवाई संभव नहीं होगा। वैसे भी देश इस मामले में सेना के जवानों के साथ है।

—ईः 30, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली–110092,
दूरभाषः 01122483408, 9811027208

देश की आजादी में आर्य समाज का उल्लेखनीय योगदान–डॉ अनिल आर्य

समाजसेवी डॉ. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई व आर पी हंस का अभिनंदन

मंगलवार, 13 फरवरी 2018, फरीदाबाद आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋर्षि बोधोत्सव पर डा. अनिल आर्य को सम्मानित करते प्रेमकुमार मितल, जितेन्द्रसिंह आर्य, सभा प्रधान डा.गजराजसिंह आर्य, महेन्द्र भाई का सम्मान करते डा.गजराजसिंह आर्य,वीरेन्द्र योगाचार्य,सभा महामंत्री अशोक शास्त्री व तृतीय चित्र–समाजसेवी आर.पी.हंस का स्वागत करते सभा के अधिकारीगण।

मंगलवार 13 फरवरी 2018, आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक, महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का बोध दिवस आर्य समाज सेक्टर 28–31 फरीदाबाद में श्री प्रेमकुमार मित्तल (एडवोकेट) की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषदनई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अनिल आर्य ने कहा की देश की आजादी की लड़ाई मे महर्षि दयानंद व आर्य समाज के अनुयायियों के रहा है लेकिन आज विघटन कारी शक्तियां सिर उठा रही है और राष्ट्र की अखंडता को चुनौती दे रही है। ऐसे समय मैं आर्य युवकों को राष्ट्रीय एकता अखंडता को सुरक्षित रखने का संकल्प लेना होगा । आज चरित्र वान, भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत युवाओं की राष्ट्र को आवश्यकता है । तभी हम महर्षि दयानंद के स्वपनों का भारत बना सकते है। वैदिक विद्वान आचार्य स्वदेश(मथुरा) ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति पर चलने का आह्वान किया। समाजसेवी लायन आर पी हंस का भव्य अभिनंदन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अनिल आर्य ने किया। सभा के प्रधान डॉ गजराज सिंह आर्य ने आभार व्यक्त किया और महामंत्री अशोक शास्त्री ने कुशल संचालन किया। प्रमुख रूप से आचार्य महेन्द्र भाई, वीरेन्द्र योगाचार्य, जितेन्द्र सिंह आर्य,नंदलाल कालरा, डॉ सत्यदेव गुप्ता, रामचंद्र गोयल, विमला ग्रोवर, महेश गुप्ता आदि उपस्थित थे

गुरूकुल खेड़ाखुर्द व गुरूकुल गौतम नगर सांसद मीनाक्षी लेखी द्वारा सम्मानित

रविवार, 11 फरवरी 2018, नई दिल्ली की सांसद मीनाक्षी लेखी गुरूकुल खेड़ाखुर्द के मंत्री मनोज मान व गुरूकुल गौतम नगर के चतरसिंह नागर, ओमवीरसिंह, प्रकाशवीर शास्त्री व ब्रह्मचारियों को स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित करती हुई।

रविवार, 4 फरवरी 2018,पलवल, आर्य युवक परिषद् हरियाणा द्वारा आर्य समाज,जवाहर नगर में आयोजित महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर डा.अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए,द्वितीय चित्र–वैदिक विद्वान डा.सोमदेव शास्त्री(मुम्बई) का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,स्वामी आर्यवेश,संजीव मंगला,जयप्रकाश आर्य आदि। स्वामी श्रद्धानन्द ने कुशल संचालन किया।

रविवार, 11 फरवरी 2018,गुरूकुल गौतम नगर द्वारा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के सभागार में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर आयोजित राष्ट्रीय विचार गोष्ठी में डा.अनिल आर्य को सम्मानित करते ठाकुर विक्रम सिंह, डा. योगानन्द शास्त्री, आनन्द कुमार (पूर्व पुलिस महानिदेशक), चतरसिंह नागर। कै.रूद्रसेन सिन्धु, डा. वेदप्रताप वैदिक, डा. शशिप्रभा कुमार ने भी सम्बोधित किया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द जी ने की व संचालन आनन्द कुमार व डा.सुधीर आर्य ने किया। द्वितीय चित्र आर्य समाज, अशोक विहार, पेज–3, दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर डॉ. अनिल आर्य व प्रवीण आर्य का अभिनन्दन करते आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्रीमती एवम् श्री भारत भूषण ग्रोवर

शनिवार, 10 फरवरी 2018, स्त्री आर्य समाज,नारायणा विहार, दिल्ली की प्रधाना माता सन्तोष वधवा के 80 वें जन्मोत्सव पर अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, संजीव वधवा, विकास वधवा आदि। द्वितीय चित्र–आर्य केन्द्रीय सभा करनाल द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द बोध उत्सव पर चौ.लाजपतराय आर्य,सत्येन्द्रमोहन कुमार व सभा प्रधान आनन्द सिंह आर्य आदि।

28वां अमेरिका आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा ''अन्टलाटा'' में दिनांक 19 जुलाई से 22 जुलाई 2018 तक भव्य आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है,दिल्ली से जाने वाले आर्य बन्धुओं के लिये 18 जुलाई से 1 अगस्त तक यात्रा का कार्यक्रम बनाया गया है, जिसका यात्रा व्यय 2,26,000 रू रहेगा तथा 6 दिन की यात्रा का व्यय 1,68,000 रू रहेगा। जिसमें भोजन,यात्रा व वीजा व्यय सम्मिलित है। सीट आरक्षण के लिये शीघ्र श्री देवेन्द्र भगत–9958889970 पर सम्पर्क करें।

प्रकाशनादि का विवरण फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
2. प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
3. मुद्रक व प्रकाशक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
4. सम्पादक का नाम	:	अनिल कुमार आर्य
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
पता	:	आर्यसमाज, टी-176-177, कबीर बस्ती, पुरानी सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली-7
5. उन व्यक्तियों के नाम, पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों।	:	केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजी.), दिल्ली

मैं अनिल कुमार आर्य एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 16-2-2018 **अनिल कुमार आर्य,** प्रकाशक

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970